B.A. Part III - प्रधान हिन्दी

16-8

कलगी बाजरे की -

अज्ञेय

हरी बिछली घास।
दोलती कलगी छरहरे बाजरे की।

अगर मैं तुमको ललाती सांझ के नभ की अकेली तारिका
अब नहीं कहता।
या शरद के भोर की नीहार - न्हायी कुंई,
टटकी कली चम्पे की, वगैरह तो
नहीं कारण कि मेरा हृदय उथला या कि सूना है
या कि मेरा प्यार मैला है।

बल्कि केवल यही : ये उपमान मैले हो गए हैं।
देवता इन प्रतीकों के कर गए हैं कूच।

कभी बासन अधिक घिसने से मुलम्मा छूट जाता है।
मगर क्या तुम नहीं पहचान पाओगे
तुम्हारे रूप के - तुम हो निकट हो इसी जादू के -
निजी किसी सहज, गहरे बोध से किस प्यार से मैं कह रहा हूँ।
अगर मैं यह कहूँ -

बिछली घास हो तुम
लहलहाती हवा में कलगी छरहरे बाजरे की?

आज हम शहरातियों को
पालतू मालंच पर संवरी जुही के फूल से

शरीर के विस्तार का - ऐश्वर्य का - औदार्य का
कहीं सच्चा, कहीं प्यारा एक प्रतीक बिछली घास है
या शरद की सांझ के सूने गगन की पीठिका पर
दोलती कलगी।

अकेले
बाजरे की।

और सचमुच इन्हें जब जब देखता हूँ
यह खुला विरान संसृति का घना हो सिमट आता है
और मैं एकांत होता हूँ समर्पित

शब्द जादू हैं —
मगर क्या समर्पण कुछ नहीं ?

~~सच्चि~~ सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' प्रयोगवाद के जनक हैं। तारसप्तक (1943 ई०) के प्रकाशन के साथ प्रयोगवाद का प्रारंभ हुआ। इसके संपादक अज्ञेय जी थे। इस धारा के कवि नवीन प्रयोग करने में विश्वास रखते हैं। भाषा, शिल्प, भाव, प्रतीक, ~~बिम्ब~~ सभी दृष्टियों से प्रयोग करना ही इनका ध्येय है। अज्ञेय ने इस कविता के माध्यम से अपनी प्रेमिका की तुलना हरी बिछली घास में डोलती छरहरी सी एक 'कलगी बाजरे की' से की है।

जब इस तरह के उपमानों का

प्रयोग अज्ञेय ने किया तो साहित्य जगत में हाहाकार मच उठा पर यही आज हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ कविताओं में से एक है। कवि का कथन है कि वह नए प्रयोग में विश्वास रखता है। इसलिए कवि ने अपने प्रेयसी के सौन्दर्य की तुलना चाँद या कमल से नहीं किया। उन्होंने उसकी तुलना अरुणिम नभ के सांझ की तारिका, शरद के भोर की नीहार से नहायी हुई चम्पे की ताजी कली से नहीं करता है। यही है अज्ञेय की प्रयोगधर्मिता। कवि कहता है कि ऐसे उपमानों के पीछे मेरी कोई बुरी भावना नहीं है। ऐसा भी नहीं है कि मेरे प्यार में गहराई नहीं है या मेरा हृदय उथला है, इसमें सूनापन भी नहीं है। मेरे भीतर कोई कटुता या मलीनता नहीं है। इन उपमानों का प्रयोग जमाने से होता आया है। अतः ये उपमान पारंपरिक जूठे, बासी और मैले हो गए हैं। नए उपमानों का प्रयोग केवल इसलिए किया गया है कि इसमें ताजगी रहे। उपमान के चयन में सावधानी भी बरती गयी है।

नायिका के सौन्दर्य को वर्णित करनेवाले पुराने उपमानों के देवता कूच कर गए हैं। अर्थात उनका महत्व समाप्त हो गया है। ये उपमान इतने पुराने और घिसे हुए हैं कि उनकी आब चली गयी है।

जैसा मुलम्मा छूट जाने पर बिना कलई के बर्तन आभा हीन हो जाता है। कवि अपनी प्रेयसी से यह पूछता भी है कि, यदि मैं इन नए उपमानों से तुम्हारे सौन्दर्य का बखान करूँ तो तुम पहचान पाओगी या नहीं। कवि पर प्रेयसी के रूप का जादू चढ़ा हुआ है। उसने अपनी प्रेयसी को बिछली घास कहकर बिल्कुल नए उपमान का प्रयोग किया है। परन्तु यह उपमान नारी की कोमलता, स्वजलता और ताजगी के अहसास को व्यक्त करता है। इसमें रूखापन न होकर एक आर्द्रता, एक नमी, सौन्दर्य की व्यापकता है। कवि कहता है कि हमारे जैसे शहरी लोग अपनी गृह वाटिका (पाले हुए बगीचे) पर सांज संवार के साथ जूही के फूल उगाते हैं। और मुग्ध होते हैं। उस ऐश्वर्य से सच्चे औदार्य रुचिर के विस्तार का बोध नहीं हो सकता जो हरी बिछली घास में है। या फिर ~~[illegible]~~ शरद ऋतु की संध्या वेला में आकाश की शून्य पीठिका पर लहलहाते बाजरे की कलगी में है।

कवि के सामने सबसे बड़ी समस्या प्रेषणीयता की है। उनकी मान्यता है कि पुरानी भाषा, पुराने शब्द, पुराने उपमान पुराने प्रतीक और पुराने बिम्ब वर्तमान संवेदनाओं एवं भावानुभूतियों को अभिव्यक्त करने में पूर्ण सक्षम नहीं हैं। इसी

कहते हैं कि जब भी मैं बाजरे की कलगी देखता हूँ तो मानो संस्कृति का वीराना घना होकर सिमट आता है और मैं उस प्रेयसी के प्रति समर्पित हो जाता हूँ। कवि कहता है कि प्रशंसा के शब्द भले ही जादू सा असर करते हों पर मैं प्रिय पर एकांत समर्पित हूँ। तो क्या इस समर्पण का कोई महत्व नहीं है?

विशेष :—

(1) यह कविता अज्ञेय के काव्य संकलन "हरी घास में क्षण भर" में संकलित है।

(2) कवि ने प्राचीन मान्यताओं, प्राचीन रूढ़ियों, विकृतियों एवं विसंगतियों को तिलांजलि दे दी है। तथाकथित उपमानों को खारिज करती है।

(3) नव्यतर एवं सहज उपमानों का प्रयोग किया गया है।

(4) यह कविता मूलतः प्रेम और प्रकृति को अभिव्यक्त करती है।

(5) यह हरी भरी घास छवि का विस्तार है, यही ऐश्वर्य सम्पन्नता, शक्ति सहनशीलता सभी का प्रतीक है। यह बिछली हुई घास इस संसार में सफलता सच्चाई प्यार का प्रतीक है।

सारतः कहा जा सकता है कि अज्ञेय की प्रयोगधर्मिता को नई भाषा की तलाश रहती है वह नए उपमान खोजता है और नए प्रतीकों एवं बिम्बों की खोज करता रहता है। यह सब इस कविता में है।

Scanned with CamScanner